परिचय

नहेम्याह की पुस्तक, पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकों में पाई जाने वाली इस्राएलियों की इतिहास का अंतिम लेख प्रस्तुत करती है। यह नहेम्याह का यरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण का संकल्प लिए बेबीलोन छोड़ने, यहूदियों को यहोवा के साथ बांधी वाचा का नवीनीकरण करने में अगुआई, और जब एज्रा ने लोगों को यहोवा की व्यवस्था पढ़कर सुनाया तो वे कैसे रोने लगे, का विश्लेषण करता है। तब यह नहेम्याह का दोबारा लौटकर लोगों को व्यवस्था के विरूद्ध किए गए पाप से पश्चाताप करने के आह्वान के साथ संबंधित करता है। यह पुस्तक पुराने नियम के इस्राएलियों की इतिहास का, जो एक ऐसे लोगों को चित्रित करता है जो बार-बार पाप में गिरते थे लेकिन उनके प्रति परमेश्वर अनुग्रहकारी था, का उपयुक्त सारांश व्यक्त करता है। इसके साथ ही, यह नए नियम काल की यहूदी मत के प्रति विशेष प्रयोजन से भी परिचित कराता है। व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो नहेम्याह एक ईश्वरीय अगुवे के रूप में कार्यरत थे जो हर पीढ़ी के लिए एक आदर्श अगुवे का प्रतीक है।

नाम और वर्गीकरण

इस पुस्तक का नाम इसके मुख्य नायक नहेम्याह के नाम पर रखा गया है, जिसका अर्थ "परमेश्वर ने जिसको शांति दी है" है। अंग्रेजी भाषा के पुराने नियम में, इसका वर्गीकरण इतिहास की एक पुस्तक के रूप में किया गया है; इब्रानी भाषा बाइबल में, इसका वर्गीकरण लेख *(केथूबीम)* के रूप में किया गया है। इससे बढ़कर, इब्रानी भाषा बाइबल, नहेम्याह की पुस्तक को एज्रा की पुस्तक का एक भाग मानती है। यह ऐसा हो सकता है कि मूल में एज्रा और नहेम्याह एक ही पुस्तक थे, जो "अधिकांश अंग्रेजी भाषा बाइबल में, जैसा अब पाया जाता है, दो उपभागों में वर्गीकृत किया गया है।"[1] हालांकि, दोनों पुस्तकों को स्वतंत्र रूप से लिखे जाने के लिए इसमें पर्याप्त भिन्नताएं पाई जाती है। इसका यह अर्थ हो सकता है कि वे अलग-अलग लिखे गए होंगे और फिर उनको एक साथ संकलित किया गया होगा, कि उन्हें फिर से अलग किया जाए।

लेखक और लेखन की तिथि

नहेम्याह की पुस्तक में प्रथम पुरुष अनुभव दिया गया है ("नहेम्याह का संस्मरण," 1:1-7:5; 12:27-43; 13:4-31); विभिन्न सूचियाँ (7:6-64; 10:1-27; 11:1-36; 12:1-26) और गिनती (7:65-73); और इसमें वर्णित कुछ

घटनाओं का अन्य पुरुष द्वारा विश्लेषण है। स्पष्ट रूप से नहेम्याह अपने संस्मरण का लेखक था, लेकिन यह निश्चितता के साथ कहना असंभव होगा कि नहेम्याह ही इस पूरे पुस्तक का लेखक था।

एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक के लेखक के प्रश्नों का उत्तर एफ. चार्ल्स फैन्सम ने इस विषय पर बहुचर्चित निम्न तीन दृष्टिकोण के द्वारा दिया है।[2]

1. एज्रा, नहेम्याह, और 1 और 2 इतिहास की पुस्तक का लेखक एज्रा हो सकता है। यह यहूदी परंपरा, बेबीलोनियम तालमूड में पाया जाता है।[3]

2. एक और मत यह है कि एज्रा और नहेम्याह व्यक्तिगत रूप से इन दोनों पुस्तकों का, जिसमें उनका नाम पाया जाता है, के लेखक थे। इस मत का समर्थन पुस्तक की अलग-अलग भाषा शैली के आधार पर किया जाता है।

3. इसके साथ ही एक और दृष्टिकोण यह है कि "इतिहासकार" ही एज्रा और नहेम्याह का अंतिम सम्पादक था। "एज्रा का संस्मरण" और "नहेम्याह का संस्मरण" प्रथम पुरुष में लिखा गया है; जबकि यह तथ्य कि इन पुस्तकों का कुछ भाग अन्य पुरुष में भी लिखा गया है, यह प्रमाणित करता है कि किसी ने इन पुस्तकों को सम्पादित किया है। इस विचारधारा के अनुसार, एज्रा और नहेम्याह ने उन भागों को स्वयं लिखा था जो उनसे संबंधित था, लेकिन एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक का अंतिम सम्पादक वही था जिसने 1 और 2 इतिहास लिखा था। यह 1 और 2 इतिहास और दोनों पुस्तकों के बीच समानता का विश्लेषण करता है, लेकिन यह एज्रा और नहेम्याह को भी अपने-अपने भाग लिखने का श्रेय प्रदान करता है। फैन्सम इस तीसरे दृष्टिकोण के पक्ष में सहमति जताता है।[4]

अन्य संभावनाओं के विपरीत, कुछ विद्वानों का मत है कि नहेम्याह की पुस्तक, नहेम्याह के मृत्युपरांत कुछ ही दिनों के अंतराल में लिखा गया था। एडवर्ड जे. यंग ने इस विचारधारा का समर्थन करने के लिए इन तीन तर्कों का प्रत्युत्तर इस प्रकार दिया हैः

पहला तर्क. नहेम्याह 12:11, 12 में "यद्दू" का वर्णन पाया जाता है। जोसेफस ने कहा कि यद्दू 351-331 ई.पू. तक, नहेम्याह के कई वर्षों बाद यहूदियों का महायाजक था। उनका दावा है कि यद्दू के सेवाकाल के दौरान सिकन्दर महान ने यरूशलेम में प्रवेश किया था।[5] इस दृष्टिकोण से, नहेम्याह ने यद्दू के बारे में नहीं लिखा होगा, क्योंकि यद्दू का जन्म उसकी मृत्यु के कई वर्षों पश्चात हुआ था। इस तर्क का एक प्रत्युत्तर यह है कि यद्दू का नाम याजकों और लेवियों के नामों की सूची में पाया जाता है, जो यह हो सकता है कि कालान्तर में यह सूची इस पुस्तक में जोड़ दिया गया हो। फिर भी, यह अनुमान लगाना व्यर्थ होगा कि इस सूची को इस पुस्तक में कालान्तर में जोड़ दिया गया होगा, चूंकि नहेम्याह की पुस्तक में यद्दू को महायाजक करके वर्णित नहीं किया गया है। इस बात की संभावना है कि नहेम्याह की आयु इतनी रही होगी कि उसने एल्याशीब के परपोते को उसके जवानी में देखा होगा। (13:28 में नहेम्याह, एल्याशीब के पोते का विवाह होने का वर्णन करता है।) नहेम्याह जिस यद्दू को याजक के रूप में जानता था वह महायाजक बन गया होगा, जिसके बारे में जोसेफस ने लिखा है।

दूसरा तर्कः नहेम्याह 12:22 में "दारा फारसी" का वर्णन है; और चूंकि उसको यद्दू से संबंधित किया जाता है, तो बहुधा उसकी पहचान दारा तृतीय कोडोमेनस (336-331 ई.पू.) के रूप में की जाती है। यदि यह पहचान ठीक है, तब नहेम्याह, जिसकी मृत्यु 336 ई.पू. से बहुत पहले हो गई थी, ने उसके बारे में नहीं लिखा होगा। इस तर्क का एक उत्तर यह है कि नहेम्याह ने इस पुस्तक के लिखे जाने के समय जिस यद्दू के बारे में, जो उस समय किशोरावस्था में रहा होगा, लिखा है, तब वह "दारा फारसी," दारा द्वितीय नोथूस हो सकता है जिसने नहेम्याह के जीवनकाल में, 423 से 404 ई.पू. तक शासन किया होगा।

तीसरा तर्कः नहेम्याह 12:26 और 47 "नहेम्याह के दिनों," के बारे में वर्णन करता है और इस वाक्यांश की व्याख्या को भूतकाल में किया जाना चाहिए। परिणामस्वरूप, इस पुस्तक का लेखक नहेम्याह नहीं हो सकता है क्योंकि उसने नहेम्याह के बारे में ऐसा लिखा है मानो वह उसके समय से बहुत पहले रहता था। इसके प्रत्युत्तर में, कोई भी यह कह सकता है कि वाक्यांश "नहेम्याह के दिनों" का प्रयोग "यहोयाकीम के दिनों" (12:26) और "जरूब्बाबेल के दिनों" (12:47) के संयोजन में किया गया होगा। चूँकि ये वाक्यांश अन्य लोगों के लिए किया गया था, तो यह मानना तर्कसंगत होगा कि नहेम्याह ने उससे मिलती जुलती अभिव्यक्ति का प्रयोग अपने समय का विश्लेषण करने के लिए किया होगा।[6]

कुछ लोगों के लिए, इस पुस्तक के लेखक का प्रश्न का समाधान इस पुस्तक के प्रारंभिक वचन में ही कर लिया गया हैः "हकल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन" (1:1)। उनका मत है कि इन वचनों का यह अर्थ है कि नहेम्याह ने पूरी पुस्तक लिखा है। वे यह पहचान करने में असफल रहते हैं कि ये वचन केवल उन्हीं वाक्यों पर लागू होता है जो तुरंत इसके पश्चात लिखे गए हैं - 1:1-7:5 में नहेम्याह का प्रथम पुरूष में लेख, पुस्तक के उस भाग पर लागू नहीं होता है जो अन्य पुरूष में लिखे गए हैं। फिर भी, इस बात की संभावना बनी रहती है कि पूरी पुस्तक नहेम्याह ने लिखा है। आर. के. हैरीसन के अनुसार, "सबसे कम कठिनाई का सामना तब करना पड़ता है जब इस बात का आंकलन किया जाता है कि प्राथमिक रूप से एज्रा और नहेम्याह से संबंधित लेखों के प्रति वे स्वयं जिम्मेदार थे।"[7]

नहेम्याह की पुस्तक के लिखे जाने की तिथि सामान्यतया इसके लेखक पर निर्भर करता है। इसलिए यह नहेम्याह का यरूशलेम की द्वितीय यात्रा, जो लगभग 432 ई.पू. में था, से पहले नहीं लिखा गया होगा।

यदि 1 और 2 इतिहास का लेखक एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक का संपादक भी एक ही था, तो संयुक्त रूप से ये पुस्तकें लगभग 400 ई.पू. में लिखा गया होगा।

यदि एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक के अंतिम संपादन के लिए वही व्यक्ति जिम्मेदार है तो तीन संभावनाएं लगभग निश्चित लगती हैः

1. उसने एज्रा और नहेम्याह के संस्मरणों को मिलाकर, कई स्रोतों का प्रयोग किया गया होगा।

2. उसने यहूदा की इतिहास, ईस्वी पूर्व पांचवीं सदी के कई वर्षों पश्चात लिखा होगा।

3. वह कई मामलों में चिंतित था। इनमें (a) यहूदियों के प्रति परमेश्वर की दया और फारस के राजा का उनके पक्ष में निर्णय लेना; (b) परमेश्वर की व्यवस्था; (c) आराधना, मन्दिर, लेवी, और याजक पद; (d) अशुद्ध करने वाले दूसरे लोगों के साथ संगति से बचना; (e) यरूशलेम; (f) विश्रामदिन; और (g) वाचा इत्यादि था।

ऐतिहासिक समायोजन

बन्धुआई से लौटने की पहली तिथि लगभग 538 ई.पू. था और जरूब्बाबेल और शेशबस्सर ने इसकी अगुआई की थी (एज्रा 1:1-2:70)। उस समय यहूदियों का मुख्य कार्य यरूशलेम में दूसरा मन्दिर बनाना था। यह परियोजना 516 ई.पू. में पूरा हुआ।

दूसरा वापसी जिसके बारे में वर्णन किया गया है वह एज्रा की वापसी लगभग 458 ई.पू. है (एज्रा 7:1-8:32)। एज्रा का उद्देश्य व्यवस्था को सिखाना व उसे लागू करना था। उस कार्य के एक भाग के रूप में उसने सुधार कार्य आरंभ किया था। फिर भी, यहूदी लोग अपने धर्म के प्रति विश्वासयोग्य नहीं बने रहे या उन्होंने एज्रा के निर्देशों का पालन नहीं किया।

इसके पश्चात, जो यहूदी बन्धुआई से लौटकर यहूदा में बस गए थे, वे अब भी फारस की साम्राज्य के आधीन बन्धुआ के समान थे। वे निर्धन, थोड़े व बहुधा निराश थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नहेम्याह की पुस्तक उन्हें रक्षाहीन लोगों के रूप में प्रस्तुत करता है। विशेषकर जब यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई थी, तो नगर किसी सेना या उपद्रवी झुण्ड के लिए एक आसान शिकार बना हुआ था।

नहेम्याह फारस के “राजा का पियाऊ” था (1:11), जो एक महत्वपूर्ण व सम्मान की उपाधि थी। वह फारसी साम्राज्य की एक राजधानी शूशन में रहता था।[8] यहूदियों की बुरी स्थिति और यरूशलेम की शहरपनाह के बारे में सुनकर, उसने वहाँ जाकर उनकी सहायता करने की अनुमति मांगी। इस पर राजा ने उसकी मांग स्वीकार करते हुए उसे लगभग 445 ई.पू. में यरूशलेम जाने की अनुमति दी। उस समय, फारस साम्राज्य के अधिकार के अंतर्गत् उस देश का वह अधिपति बना (10:1)।

पुस्तक यह बताती है कि किस प्रकार नहेम्याह ने दो कार्य सम्पन्न किएः यरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण और वाचा का नवीनीकरण। लगभग 433 ई.पू. में नहेम्याह फारस के राजा के पास कुछ समय के लिए चला गया था। जब वह दोबारा यहूदा लौटा तो उसने पाया कि वहाँ व्यवस्था का दुरुपयोग किया जा रहा था (13:6, 7)। यह पुस्तक उन दिनों में उसके द्वारा किए सुधार के कार्य का विश्लेषण करते हुए समाप्त होता है। नहेम्याह की पुस्तक में वर्णित परिस्थिति यहूदा के पाप से मिलता जुलता है, जिसकी निंदा मलाकी की पुस्तक में किया गया है।

कई मायनों में, यीशु के दिनों में नहेम्याह की पुस्तक यहूदियों की चिंता व रूची का पूर्वानुमान करती है। उदाहरण के लिए, यह पुस्तक विश्रामदिन मनाने,

दशमांश देने, और परदेशियों से अलग रहने को दर्शाता करता है।

नहेम्याहः एक व्यक्तित्व

निस्संदेह पुराने नियम में नहेम्याह एक प्रमुख व्यक्तित्व है। उसके सामर्थी व्यक्तित्व को सदैव सराहा जाता है - परमेश्वर के लिए उसका उत्साह, परमेश्वर के लोगों के प्रति उसका प्रेम, और उसका समर्पण और जो कार्य परमेश्वर ने उसे करने के लिए दिया था, उसको पूरा करने का संकल्प। व्यवहारिक बुद्धि, संगठनात्मक कौशल, और विरोध के बीच उसके साहस के लिए भी वह अकसर सराहा जाता है। परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए नहेम्याह समर्पित, गुणी और अदभुत रीति से शिक्षित था।

उद्देश्य

नहेम्याह की पुस्तक का उद्देश्य ऐतिहासिक, धर्मवैज्ञानिक, व व्यवहारिक है।

ऐतिहासिकः इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य आने वाली पीढ़ी के लिए यरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण और यरूशलेम के जीर्णोद्धार में जुटे हुए बहुत से लोगों के नामों को संजोए रखना था।

धर्मवैज्ञानिकः दूसरा उद्देश्य से यह प्रमाणित करना था कि सीनै पहाड़ पर बांधी गई वाचा के कारण अभी भी इस्राएल के लोग परमेश्वर के अपने लोग थे। इस वाचा को नहेम्याह के दिनों में नवीनीकृत किया गया। जिन यहूदियों ने इस पुस्तक को पढ़ा उनको वाचा स्मरण दिलाकर और इस्राएल का उसमें एक भाग होने के द्वारा शांति (नहेम्याह के नाम अर्थानुसार) मिला। इससे बढ़कर, जिस प्रकार नहेम्याह के कार्य को इस पुस्तक में वर्णित किया गया है, ने यहूदियों को वाचा बांधे रहने के लिए उत्साहित किया होगा।

व्यवहारिकः नहेम्याह के सुधार कार्य ने यहूदियों को स्मरण दिलाया कि स्वधर्म त्याग संभव है (देखें 13:1-31), इसलिए सतर्क रहना अनिवार्य है और परमेश्वर के सच्चे धर्म की पुनः स्थापना करना एक निरंतर चुनौती है।

पुराने नियम में लिखा गया इस्राएल की इतिहास का यह अंतिम भाग यह पुष्टि करता है कि इस्राएली लोगों ने कभी भी वाचा का पालन ठीक से नहीं किया। इस पुस्तक के आदि पाठकों को नई वाचा की प्रतीक्षा करनी थी (देखें यिर्म. 31:31-34)।

ओजपूर्ण कथन

नहेम्याह की पुस्तक में दो महत्वपूर्ण घटनाएं केन्द्रित हैं। 445 ई.पू. में नहेम्याह के आगमन के पश्चात, अध्याय 1 से 7 अर्तक्षत्र प्रथम के बीसवें वर्ष में यरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण का विश्लेषण करता है (1:1)। अध्याय 8 से 13 यहूदियों की परमेश्वर के साथ वाचा का नवीनीकरण, धार्मिक सुधार इत्यादि, का विश्लेषण

करता है। जिस तरह एज्रा की पुस्तक में मन्दिर का पुनर्निर्माण ने लोगों को आत्मिक जागृति प्रदान किया, उसी तरह नहेम्याह की पुस्तक में शहरपनाह की निर्माण ने वाचा को नवीनीकृत किया। इसने यहूदियों को एक सुरक्षित स्थान प्रदान किया जहाँ वे बाहरी शत्रुओं के हस्तक्षेप से सुरक्षित थे। इस सुरक्षित स्थान में, वे वर्षों पहले परमेश्वर और इस्राएल के बीच बांधी गई वाचा की शर्तों को आसानी से मान सकते थे (निर्गमन 19:1- 20:26)।

रूपरेखा

I. यरूशलेम की शहरपनाह का पुनर्निर्माण के प्रति समर्पण (1-7)
   A. बुरी खबर के प्रति नहेम्याह का प्रत्युत्तर (1:1-11)
   B. नहेम्याह का यरूशलेम को लौटना (2:1-10)
   C. यरूशलेम की शहरपनाह पर नहेम्याह के कार्य का आरंभ (2:11- 20)
   D. शहरपनाह के निर्माता (3:1-32)
   E. बिना किसी कारण नहेम्याह का विरोध (4:1-23)
   F. नहेम्याह के लिए आंतरिक समस्या (5:1-19)
   G. शत्रु पराजित हुए और शहरपनाह का कार्य संपन्न हुआ (6:1-19)
   H. यरूशलेम को सुरक्षित करना और पुनः बसाना (7:1-73)

II. वाचा को नवीनीकरण करने के प्रति समर्पण (8-13)
   A. वाचा का नवीनीकरण करने के लिए एज्रा की तैयारी (8:1-18)
      1. व्यवस्था का पढ़ा जाना और उसका परिणाम (8:1-12)
      2. झोपड़ियों का पर्व मनाना (8:13-18)
   B. वाचा का नवीनीकरण किया गया (9:1-10:39)
      1. तैयारीः व्यवस्था पढ़ा जाना और पापांगीकार (9:1-5)
      2. उनके इतिहास की समीक्षा (9:6-38)
      3. वाचा में लिखे गए नाम (10:1-27)
      4. वाचा का प्रतिबंध (10:28-39)
   C. वाचा का पालन सुनिश्चित करने के उपाय (11:1-12:47)
      1. यरूशलेम और यहूदा के नए निवासी (11:1- 36)
      2. याजकों एवं लेवियों की सेवा तथा शरहरपनाह की प्रतिष्ठा (12:1-47)
   D. वाचा लागू करना (13:1-31)
      1. गैर-यहूदियों का अलगाव (13:1-3)
      2. नहेम्याह के सुधार (13:4-31)

समाप्ति नोट्स

[1]पीटर सी. क्रैग, दी ओल्ड टेस्टामेंट: इट्स बैकग्राउंड, ग्रोथ एंड कंटेंट (नैशविल : अबिंगडन प्रेस, 1986), 249. [2]एफ. चार्ल्स फैन्सम, *द बुक्स आफ एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 1-3. [3]एक मतानुसार एज्रा ने एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक के साथ-साथ 1 और 2 इतिहास की कुछ भाग भी लिखा था। बाद में इतिहास की पुस्तक का लेखन नहेम्याह ने पूरा किया था। (तालमूड *बाबा बाथरा* 15a.) [4]फैन्सम, 3. 5जोसेफस *एंटीकीटीज* 11.8.3-7. [6]एडवर्ड जे. यंग, *एन इंट्रोडक्शन टू दि ओल्ड टेस्टामेंट*, संशोधित एड. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1964), 386-87. [7]आर. के. हैरीसन, *इंट्रोडक्शन टू दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1969), 1150. [8]उस समय की अन्य राजधानियां परसीपोलीस, एक्बाताना, और बाबूल था। (एज्रा 6:1, 2; नहेम्य. 1:1; एस्तेर 1:1, 2 में की गई टिप्पणी देखें।)